

II. समग्र मांग

निजी उपभोग मांग में वृद्धि में 2009-10 की दूसरी तिमाही में काफी सुधार हुआ जो छह तिमाहियों में उच्चतम वृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। निवेश मांग, सकल निर्धारित पूंजी निर्माण के संदर्भ में, भी और सुधरी। वैश्विक मंदी की शुरुआत से, सरकारी व्यय में वृद्धि निजी मांग से आगे रही और 2009-10 की दूसरी तिमाही में छोटे वेतन आयोग पंचाट संबंधी शेष राशि भुगतान दर्शाते हुए काफी वृद्धि हुई। 2009-10 की दूसरी तिमाही में कंपनी बिक्री वृद्धि ने पिछली तिमाही की तुलना में काफी सुधार दर्शाया, यद्यपि वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि सपाट बनी रही; विनिर्माण क्षेत्र की कंपनियों के लिए बिक्री वृद्धि में सुधार सेवा क्षेत्र की तुलना में मजबूत था।

घरेलू मांग

II.1 निजी उपभोग मांग वृद्धि में 2009-10 की ति1 में 1.6 प्रतिशत तक आई गिरावट और मंद निजी निवेश मांग 2008-09 की दूसरी छमाही में मंदी से जीडीपी वृद्धि के तेज सुधार में मुख्य रुकावटें थी। किंतु, 2009-10 की ति2 में निजी उपभोग मांग में वृद्धि सुधर कर 5.6 प्रतिशत हो गई और निवेश मांग, सकल निर्धारित पूंजी निर्माण (जीएफसीएफ) वृद्धि के संदर्भ में नापी गई, भी सुधर कर 7.3 प्रतिशत हो गई। जबकि निजी उपभोग मांग में वृद्धि पिछली तीन तिमाहियों में सर्वाधिक है, सकल निर्धारित पूंजी निर्माण वृद्धि पिछली चार तिमाहियों में सर्वाधिक है। सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (जीएफसीई) 2009-10 की ति2 में 2008-09 के

समकाल की तिलना में लगभग 27 प्रतिशत बढ़ा जिसका मुख्य कारण छोटे वेतन आयोग पंचाट संबंधी शेष राशि का भुगतान था (चार्ट II.1)। शेष राशि का भुगतान छोड़कर, वृद्धि 11.7 प्रतिशत पर कम रही होती। तदनुसार, मांग पक्षीय जीडीपी 2009-10 की ति2 के 6.7 प्रतिशत की तुलना में 5.5 प्रतिशत रही होती।

II.2 कारक लागत में जीडीपी (आपूर्ति पक्ष) और बाजार मूल्य में जीडीपी (मांग पक्ष) की वृद्धि दरों में अंतर निवल अप्रत्यक्ष करों की वृद्धि दरों में अंतर (अर्थात सब्सिडी घटाकर अप्रत्यक्ष कर) के कारण था। 2009-10 की ति2 में, निवल अप्रत्यक्ष कर 2008-09 के समकाल की 8.0 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में 4.8 प्रतिशत कम हो गए। परिणाम स्वरूप, बाजार मूल्य में जीडीपी कारक लागत में जीडीपी की 7.9 प्रतिशत की तुलना में 6.7 प्रतिशत बढ़ी।

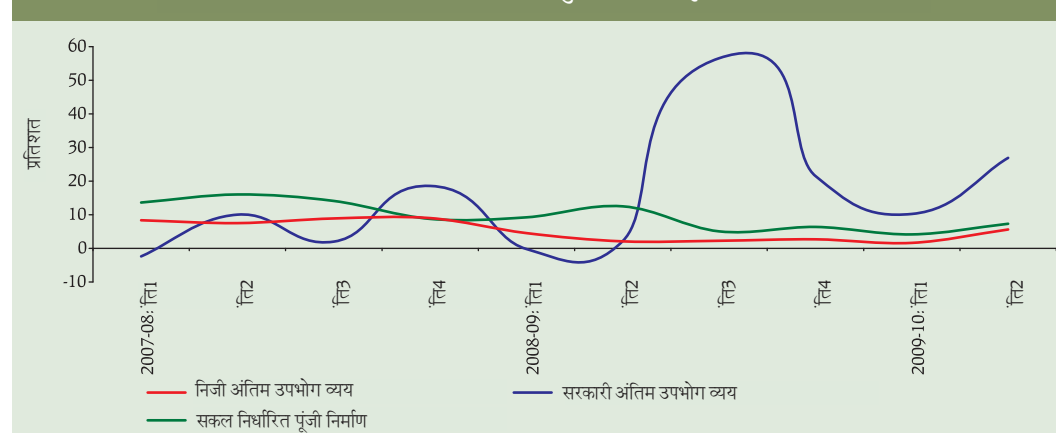
II.3 मालसूची स्तर में पिछली तिमाही और गत वर्ष के समकाल की तुलना में 2009-10 की ति2 में तेज

कमी हुई। यह दर्शाता है कि निकट संदर्भ में वृद्धि का एक भाग मालसूची को सामान्य स्तर पर लाने की आवश्यकता से प्रेरित हो सकती है। कंपनी निष्पादन पर आंकड़े भी 2009-10 की ति2 से मालसूची चक्र (बिक्री के प्रति स्टॉक अनुपात) में सुधार की शुरुआत की ओर संकेत करते हैं। कुल मांग में सरकारी उपभोग मांग के कम हिस्से के बावजूद (10 प्रतिशत से कम), आर्थिक कार्यों में संकट संबंधी मंदी के प्रति राजकोषीय प्रतिसाद हाल की तिमाहियों में सरकारी व्यय में वृद्धि के रूप में दिखा (सारणी 2.1)।

संयुक्त बजटीकृत सरकारी वित्त: 2009-10

II.4 केंद्र और राज्य सरकारों के संयुक्त वित्त के मुख्य घाटा संकेतक 2008-09 (आरई) की तुलना में 2009-10 में अधिक रहने का अनुमान है जो वैश्विक वित्तीय संकट के संदर्भ में राजकोषीय प्रोत्साहन दर्शाता है (सारणी 2.2)। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में कुल

चार्ट II.1: देशी मांग के प्रमुख घटकों में वृद्धि दर



मौद्रिक नीति वक्तव्य
2009-10

समष्टि आर्थिक और
मौद्रिक गतिविधियां
तीसरी तिमाही की समीक्षा
2009-10

सारणी 2.1: जीडीपी का मांग पक्ष (1999-2000 मूल्य)										
(प्रतिशत)										
मद	2007-08*	2008-09#	2008-09				2009-10		अप्रैल-सितंबर	
			ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	2008-09	2009-10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
वृद्धि दर										
बाजार मूल्यों पर वास्तविक जीडीपी	9.1	6.1	8.2	7.8	4.8	4.1	6.0	6.7	8.0	6.4
कुल खपत व्यय	8.3	5.4	3.8	2.1	9.0	6.1	2.8	8.4	3.0	5.6
(i) निजी	8.5	2.9	4.5	2.1	2.3	2.7	1.6	5.6	3.3	3.6
(ii) सरकारी	7.4	20.2	-0.2	2.2	56.6	21.5	10.2	26.9	0.9	18.1
सकल अचल पूँजी निर्माण	12.9	8.2	9.2	12.5	5.1	6.4	4.2	7.3	10.9	5.8
स्टॉक में परिवर्तन	51.7	2.9	6.0	5.6	1.4	-0.9	3.2	-45.4	5.8	-21.3
निर्यात	2.1	12.8	25.6	24.3	7.1	-0.8	-10.9	-15.0	25.1	-12.6
आयात को घटाकर	6.9	17.9	27.4	35.3	21.7	-5.7	-21.2	-29.8	31.4	-25.7
सापेक्षिक हिस्सा										
कुल खपत व्यय	66.9	66.5	67.5	63.7	69.9	64.8	65.5	64.7	65.6	65.1
(i) निजी	57.2	55.5	58.0	55.5	57.4	51.4	55.6	54.9	56.7	55.2
(ii) सरकारी	9.8	11.1	9.6	8.3	12.5	13.4	9.9	9.8	8.9	9.9
सकल अचल पूँजी निर्माण	31.6	32.2	32.2	34.5	30.9	31.6	31.6	34.7	33.3	33.2
स्टॉक में परिवर्तन	3.1	3	3.2	3.2	2.9	2.9	3.1	1.6	3.2	2.4
निवल निर्यात	-4.3	-5.8	-1.3	-10.5	-8.5	-2.9	1.6	-4.2	-6.0	-1.3
ज़ापन: (करोड़ रुपए)										
बाजार मूल्य पर वास्तविक जीडीपी	34,02,716	36,09,425	8,33,631	8,49,245	9,45,121	9,81,427	8,83,492	9,06,559	16,82,876	17,90,051
*: त्वरित अनुमान # : संशोधित अनुमान।										
नोट: चूंकि प्रमुख मंदें ही सारणी में शामिल की गई हैं, इसलिए आंकड़ों का जोड़ 100 नहीं होगा।										
स्रोत: केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन।										

व्यय पिछले वर्ष की तुलना में अधिक और राजस्व और वृद्धि के प्रोत्साहन के लिए कर कटौती दर्शाता
प्राप्तियां कम रहने का अनुमान है जो आर्थिक मंदी है।

सारणी 2.2 : प्रमुख राजकोषीय संकेतक				
(जीडीपी का प्रतिशत)				
वर्ष	प्राथमिक घाटा	राजस्व घाटा	सकल राजकोषीय घाटा	बकाया देयताएं*
1	2	3	4	5
केंद्र				
2007-08	-0.9	1.1	2.7	60.1
2008-09	2.6	4.6	6.2	58.9 (RE)
(आंशिक लेखा)				
2009-10 ब.अ.	3.0	4.8	6.8	59.7
राज्य				
2007-08 #	-0.6	-0.9	1.5	27.8
2008-09 # सं.अ.	0.7	-0.1	2.7	27.1
2009-10 # ब.अ.	1.4	0.6	3.4	27.5
संयुक्त				
2007-08	-1.3	0.2	4.2	75.1
2008-09 सं.अ.	3.5	4.4	8.9	74.7
2009-10 ब.अ.	4.5	5.5	10.2	76.6
सं.अ.: संशोधित अनुमान ब.अ.: बजट अनुमान				
* : ऐतिहासिक विनिमय दर पर बाह्य देयताएं शामिल हैं।				
# : आंकड़े 27 राज्यों के हैं जिनमें से दो वोट-ऑन-अकाउंट हैं।				
नोट: 1. ऋणात्मक चिह्न अधिशेष दर्शाता है।				
2. 2007-08 में जीडीपी के 0.8 प्रतिशत, 2008-09 में जीडीपी के 1.8 प्रतिशत और 2009-10 में जीडीपी के 0.2 प्रतिशत राशि के तेल/एफसीआइ/उर्वरक कंपनियों को जारी विशेष बांडों का निर्गम छोड़कर।				

केंद्र की राजकोषीय स्थिति

II.5 राजकोषीय वर्ष 2009-10 (अप्रैल-नवंबर)के लिए उपलब्ध अद्यतन जानकारी के अनुसार, राजस्व घाटा और सकल राजकोषीय घाटा (जीएफडी) गत वर्ष के समकाल की तुलना में समग्र संदर्भ में काफी उच्च रखे गए थे किंतु वे बजट अनुमान के अनुसार कम थे (सारणी 2.3 और चार्ट II.2)।

II.6 राजस्व के संदर्भ में, अनुमानित के आधे से भी कम राशि अप्रत्यक्ष कर राजस्व में कमी के चलते राजकोषीय

वर्ष 2009-10 के पहले आठ महीनों में संगृहीत की गई। जबकि सीमा शुल्क कतिपय संवेदनशील पण्यों पर शून्य प्रभार और आयात में निरंतर कमी से प्रभावित थे, वहीं कर कटौती के मुख्य कारण से उत्पाद शुल्क कम हो गया। हाल के महीनों में विनिर्माण क्षेत्र में सुधरे निष्पादन से वर्ष के शेष महीनों में उत्पाद शुल्क संग्रह पर अच्छा प्रभाव होने की आशा की जा सकती है। अप्रैल-नवंबर 2008 की तुलना में अप्रैल-नवंबर 2009 में उच्च वृद्धि दर्ज करने के बावजूद, करेतर राजस्व, बजट अनुमान के प्रतिशत के रूप में, गत वर्ष के समकाल की तुलना में अप्रैल-नवंबर

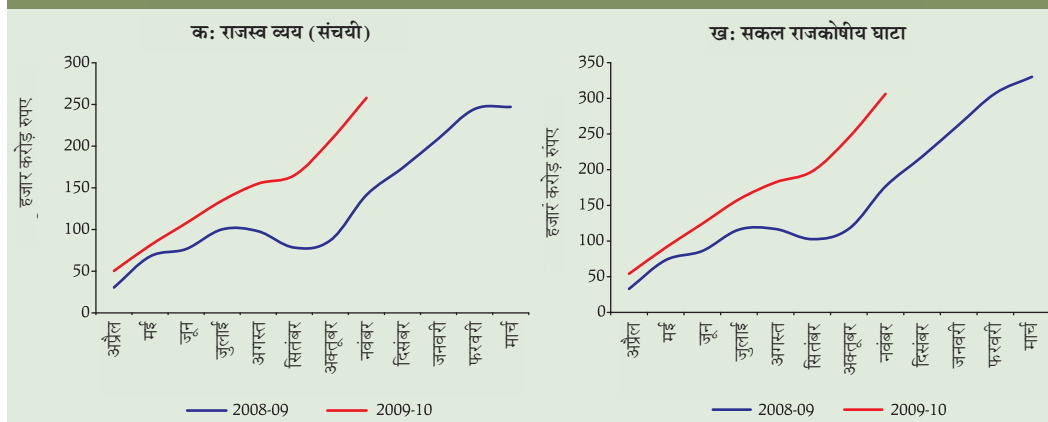
सारणी 2.3: अप्रैल-नवंबर 2009 के दौरान केंद्र सरकार का वित्त

मद	2009-10 (बअ) राशि	अप्रैल-नवंबर					
		राशि		बअ का प्रतिशत		वृद्धि दर	
		2008	2009	2008	2009	2008	2009
1	2	3	4	5	6	7	8
I. राजस्व प्राप्ति (i + ii)	6,14,497	3,14,974	3,07,125	52.2	50.0	14.7	-2.5
i) कर राजस्व	4,74,218	2,53,558	2,32,873	50.0	49.1	15.1	-8.2
ii) करेतर राजस्व	1,40,279	61,416	74,252	64.1	52.9	13.2	20.9
2. ऋणोत्तर पूंजी प्राप्ति	5,345	2,640	8,326	18.0	155.8	-57.1@	215.4
3. योजनेतर व्यय जिसमें से:	6,95,689	3,57,994	4,47,995	70.5	64.4	36.0@	25.1
i) ब्याज भुगतान	2,25,511	1,11,680	1,19,504	58.5	53.0	7.7	7.0
ii) रक्षा	1,41,703	52,557	78,955	49.8	55.7	30.3	50.2
iii) प्रमुख सब्सिडियां	1,06,004	98,739	90,766	147.3	85.6	113.6	-8.1
iv) राज्यों और संघ शासित प्रदेशों को अनुदान	48,570	21,068	31,509	48.7	64.9	-6.1	49.6
4. योजना व्यय	3,25,149	1,36,130	1,73,677	55.9	53.4	20.9	27.6
5. राजस्व व्यय	8,97,232	4,56,338	5,65,027	69.3	63.0	32.4	23.8
6. पूंजी व्यय	1,23,606	37,786	56,645	40.7	45.8	21.0@	49.9
7. कुल व्यय	10,20,838	4,94,124	6,21,672	65.8	60.9	31.5@	25.8
8. राजस्व घाटा	2,82,735	1,41,364	2,57,902	256.2	91.2	102.0	82.4
9. सकल राजकोषीय घाटा	4,00,996	1,76,510	3,06,221	132.4	76.4	85.7@	73.5
10. सकल प्राथमिक घाटा	1,75,485	64,830	1,86,717	-112.7	106.4	-	-
जापन:							
1. सकल कर राजस्व	6,41,079	3,57,441	3,29,606	52.0	51.4	17.5	-7.8
प्रत्यक्ष कर	3,70,000	1,77,511	1,88,923	48.6	51.1	22.5	6.4
अप्रत्यक्ष कर	2,71,079	1,79,930	1,40,683	55.8	51.9	13.0	-21.8
2. बजट से भिन्न मदें *	-	58,000#	10,306#	-	-	-	-
बअ: बजट अनुमान							
* : तेल और उर्वरक बांड सहित। #: दिसंबर तक।							
@ : वृद्धि दर की गणना एसबीआइ में रिजर्व बैंक की धारिता के 2007 में सरकार को अंतरण के समायोजन के बाद की जाती है।							
स्रोत: महा लेखा नियंत्रक, वित्त मंत्रालय।							

मौद्रिक नीति वक्तव्य 2009-10

समष्टि आर्थिक और
मौद्रिक गतिविधियां
तीसरी तिमाही की समीक्षा
2009-10

चार्ट II.2: केंद्र के प्रमुख घाटा संकेतक

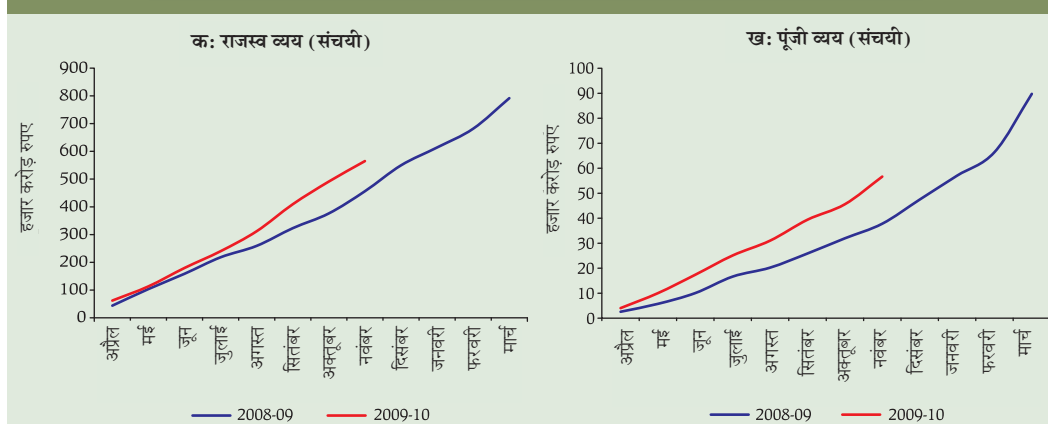


2009 में कम था, क्योंकि तीसरे-जनरेशन (3-जी) वर्णक्रम, जिसकी आय से 35,000 करोड़ रुपए आगम का अनुमान था, सफल नहीं हो सकी। अप्रैल-नवंबर 2009 में ऋणोत्तर पूंजी प्राप्तियां अनुमानित (1,120 करोड़ रुपए) से अधिक विनिवेश आय (4,305 करोड़ रुपए) के कारण बजट अनुमानों से आगे निकल गई।

II.7 व्यय पक्ष में, रक्षा राजस्व व्यय, पेंशन और सामाजिक सेवा व्यय में तेज वृद्धि के बावजूद, अप्रैल-

नवंबर 2009 में मुख्य सब्सिडियों में कमी के कारण गत वर्ष के समकाल की तुलना में कमी आई। जबकि खाद्य सब्सिडी अप्रैल-नवंबर 2009 में 39 प्रतिशत बढ़ी, घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मूल्यों में कमी के अनुरूप, यह उर्वरक सब्सिडी में कमी से अधिक प्रभावित था। पूंजी व्यय ने अप्रैल-नवंबर 2009 में गत वर्ष के समकाल की तुलना में तेज वृद्धि दर्ज हुई (चार्ट II.3)। जबकि रक्षा पूंजी व्यय अप्रैल-नवंबर 2009 में 55 प्रतिशत बढ़ा,

चार्ट II.3: केंद्र सरकार की व्यय पद्धति



रक्षा से भिन्न पूंजी व्यय रेलवे व्यय में तेज वृद्धि से 60 प्रतिशत बढ़ा।

II.8 दिसंबर 2009 में अनुदानों के लिए अनुपूरक मांग में, केंद्र सरकार ने 30,943 करोड़ रुपए के अतिरिक्त व्यय के लिए अनुमोदन लिया है जिसमें से निवल नकदी बहिर्वाह 25,725 करोड़ रुपए होगा। सरकार के अनुसार, अतिरिक्त व्यय से यह अपेक्षित नहीं है कि वह 2009-10 के लिए कुल अनुमानित व्यय में खास अंतर लाएगा, क्योंकि बचत की सम राशि अन्य अनुदानों से प्राप्त होगी।

II.9 वित्त मंत्रालय के अनुसार, निवल प्रत्यक्ष कर संग्रह अप्रैल-दिसंबर 2009 में गत वर्ष के समकाल की तुलना में 8.5 प्रतिशत बढ़ा; दिसंबर 2009 में वृद्धि 24.5 प्रतिशत पर बहुत अधिक थी जो कंपनी कर संग्रह में 44.0 प्रतिशत वृद्धि से प्रेरित थी। किंतु, निजी आय कर के तहत संग्रह अप्रैल-दिसंबर 2009 में मुख्य रूप से उच्च कर वापसी से 0.4 प्रतिशत कम हो गया (दिसंबर 2009 में -19.8 प्रतिशत)।

राज्य वित्त: 2009-10¹

II.10 राजकोषीय सुधार और समेकन प्रक्रिया, वैश्विक वित्तीय संकट के प्रारंभ से पहले दिखी, 2008-09 में आर्थिक कार्य में काफी कमी के प्रकाश में दबाव में आ गई जिसके लिए यह अपेक्षित था कि राजकोषीय विस्तार से आर्थिक सुधार लाया जाए। अतः राज्य सरकारों का समेकित राजस्व खाता पिछले तीन वर्षों में अधिशेष में रहने के बाद 2009-10 में जीडीपी के 0.6 प्रतिशत घाटे में बदलने का अनुमान है। परिणाम स्वरूप, जीएफडी

2008-09 (आरई) में 2.7 प्रतिशत की तुलना में 2009-10 में जीडीपी के 3.4 प्रतिशत पर अधिक होने का अनुमान है। समेकित प्राथमिक घाटा 2008-09 (आरई) में 0.7 प्रतिशत से 2009-10 में जीडीपी के 1.4 तक बढ़ने का अनुमान है। 2009-10 में, राज्य सरकारों को पूंजी व्यय करने के लिए सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के 0.5 प्रतिशत के अतिरिक्त बाजार उधार उभारने की अनुमति दी गई। किंतु, समेकित राजस्व व्यय में वृद्धि 2009-10 के पूंजी व्यय से अधिक होने का अनुमान है, समग्र संदर्भ तथा जीडीपी संदर्भ दोनों में।

II.11 राज्य सरकारों के राजस्व खाते में 2008-09 (आरई) और 2009-10 (बीई) में खराबी स्व-कर संग्रह में मंदी और केंद्र से अंतरण के साथ ही अधिकतर राज्यों द्वारा छठे वेतन आयोग की सिफारिशें लागू करने की उच्च व्यय प्रतिबद्धता के संयुक्त प्रभाव के कारण थी। जीएफडी का फैलना मुख्य रूप से राजस्व खाते में खराबी के चलते था जिसके साथ निवल उधार में वृद्धि हुई थी (राज्य सरकारों द्वारा विस्तारित ऋणों से वसूलियां घटाकर)।

कंपनी निष्पादन

II.12 2009-10 की पहली छमाही गैर-वित्तीय गैर-सरकारी कंपनियों के लिए मंद शुरुआत थी जिसने गत वर्ष की तुलना में राजस्व में कमी देखी, प्राथमिक रूप से कमजोर आर्थिक स्थिति और कम पण्य मूल्यों के कारण। निवल लाभ, तथापि, 2009-10 पहली और दूसरी दोनों

¹ 27 राज्य सरकारों के बजट दस्तावेजों पर आधारित, जिनमें से दो वोट-ऑन-अकाउंट हैं।

तिमाहियों में बढ़ा जिसका प्राथमिक कारण था बिक्री की तुलना में व्यय में भारी कमी; कम विदेशी मुद्रा संबंधी हानियां; और अन्य आय में कम वृद्धि (सारणी 2.4)।

II.13 क्रम से, सुधारित मात्रा ने कंपनियों की कुल बिक्री ति1 की तुलना में 2009-10 की ति2 में 10 प्रतिशत से अधिक बढ़ाई। इसके अलावा, बिक्री के प्रति व्यापार में माल अनुपात, जो 2008-09 की दूसरी छमाही में नकारात्मक था, 2009-10 की ति1 और ति2 में कारोबारी मांग में परिवर्तन के प्रति मालसूची स्तरों में समायोजन दर्शाते हुए सकारात्मक हो गया।

II.14 2009-10 की ति2 में, जबकि कच्चे माल की खपत पर व्यय, बिजली और ईंधन सहित, गत वर्ष के समकाल की तुलना में कम हो गया, यह ति1 की तुलना में कम था, क्योंकि पण्य मूल्य मजबूत होने लगे थे।

इसी प्रकार, ब्याज भुगतान, गत वर्ष के समकाल के उच्च आधार से कम हो गया था, बढ़ते औद्योगिक उत्पादन की सहायता से बढ़ते आर्थिक कार्यों के आधार पर उधार में वृद्धि दर्शाते हुए ति1 की तुलना में बढ़ गया। इसके अलावा, ति2 के निवल लाभ में अन्य आय का योगदान पिछली तिमाही और गत वर्ष की सम तिमाही की तुलना में गिर गया क्योंकि नॉन-कोर कार्यों, जो वर्ष-दर-वर्ष आधार पर बढ़ गए थे, ति1 की तुलना में कम हो गए थे जिसका मुख्य कारण विदेशी मुद्रा लेनदेनों से हुए लाभ में कमी आना था। परिणाम स्वरूप, चुनिंदा कंपनियों की सकल और निवल लाभ मार्जिन पिछली तिमाही की तुलना में क्रमिक रूप से कम हो गईं किंतु वर्ष-दर-वर्ष काफी सुधर गईं। क्षेत्र वार, बिक्री में क्रमिक तेजी सेवा क्षेत्र की तुलना में विनिर्माण क्षेत्र की कंपनियों के संदर्भ में अधिक थी।

सारणी 2.4: कंपनी क्षेत्र - वित्तीय निष्पादन

(वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दर/अनुपात प्रतिशत में)

मद	2008-09	2008-09				2009-10	
		ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2
1	2	3	4	5	6	7	8
कंपनियों की संख्या	2,549	2,500	2,386	2,486	2,561	2,530	2,531
बिक्री	17.2	29.3	31.8	9.5	1.9	-0.9	0.1
अन्य आय	6.6	-8.4	-0.6	-4.8	39.4	50.2	6.0
व्यय	19.5	33.5	37.5	12.6	-0.5	-4.4	-2.5
ह्रास	17.4	15.3	16.5	16.8	19.6	21.5	20.7
सकल लाभ	-4.2	11.9	8.7	-26.7	-8.8	5.8	10.9
ब्याज भुगतान	57.3	58.1	85.3	62.9	36.5	3.7	-1.0
कर पश्चात लाभ	-18.4	6.9	-2.6	-53.4	-19.9	5.5	12.0
चयनित अनुपात							
बिक्री के प्रति व्यापारगत स्टॉक में परिवर्तन	0.4	2.9	2.2	-1.7	-1.8	0.6	2.3
बिक्री के प्रति सकल लाभ	13.3	14.5	13.5	11.0	13.7	15.7	14.9
बिक्री के प्रति कर पश्चात लाभ	8.1	9.7	8.6	5.3	8.1	10.2	9.4
बिक्री के प्रति ब्याज	3.1	2.4	2.9	3.8	3.2	2.8	3.1
सकल लाभ के प्रति ब्याज	23.6	16.8	21.5	34.6	23.3	18.0	20.5
ब्याज कवरेज (टाईम)	4.2	6.0	4.6	2.9	4.3	5.6	4.9

II.15 2009-10 की पहली छमाही में बिक्री में लगातार गिरावट, दूसरी तिमाही में क्रमिक सुधार के बावजूद, ने कुल मांग में कमजोरी दर्शाई। किंति, दूसरी तिमाही से मालसूची चक्र में सुधार औद्योगिक सुधार में सहायता देता प्रतीत होता है। 2009-10 की तीसरी तिमाही के आंशिक आंकड़े (छोटा नमूना) संकेत देता है कि बिक्री वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) में काफी सकारात्मक बदलाव हुआ। इस मुख्य संकेतक को निजी मांग में और सुधार के रूप में देखा जा सकता है जिससे नवंबर 2009 तक देखे गए आइआइपी सुधार में निरंतरता की आशा है।

बाह्य मांग

II.16 2009-10 की ति2 में वास्तविक संदर्भ में पिछली तिमाही हे साथ ही गत वर्ष की सम तिमाही की तुला में निर्यात और आयात दोनों कम हो जाने के बावजूद, निर्यात की तुलना में आयात में (वास्तविक संदर्भ में) तेज कमी आई। जबकि निवल निर्यात (माल और सेवा) 2008-09 और 2009-10 दोनों की दूसरी तिमाहियों में नकारात्मक बना रहा, 2008-09 की ति2 की तुलना में 2009-10 की ति2 में निवल निर्यात में 51,623 करोड़ रुपए की निरपेक्ष वृद्धि हुई। परिणाम स्वरूप, 2009-10 की ति2 में जीडीपी (मांग पक्ष) में आधी वृद्धि निवल निर्यात से हुई थी (सारणी 2.1)। 2009-10 की ति2 से आगे के निवल निर्यातों की जानकारी आंशिक रूप से वणिक् माल व्यापार व्यवहार से प्राप्त

की जा सकती है। वणिक् माल व्यापार का घाटा अप्रैल-नवंबर 2009 में 66.2 बिलियन अमरीकी डॉलर था जो अप्रैल-नवंबर 2008 के 100.2 बिलियन अमरीकी डॉलर से 33.9 प्रतिशत कम था क्योंकि उक्त अवधि में निर्यात की तुलना में आयात में अधिक कमी आई थी। बाह्य मांग की स्थिति पर विस्तृत चर्चा अध्याय III में की गई है।

II.17 समापन के रूप में, बाजार मूल्यों पर जीडीपी से नापी गई कुल मांग दर्शाती है कि 2008-09 की दूसरी छमाही से देखी गई गिरावट के बाद से 2009-10 की ति2 में निजी उपभोग मांग और निवेश मांग में सुधार हुआ है। सरकार का अंतिम उपभोग व्यय, जो 2009-10 की ति1 में कम हो गया था, ति2 में काफी बढ़ गया। अप्रैल-नवंबर 2009 में, केंद्र सरकार के मुख्य घाटा संकेतक, अर्थात् राजस्व घाटा और राजकोषीय घाटा, बजट अनुमान के अनुपात के रूप में, गत वर्ष के समकाल की तुलना में काफी कम था। कंपनी क्षेत्र के आंकड़े दर्शाते हैं कि वर्ष-दर-वर्ष बिक्री वृद्धि 2009-10 की ति2 में सामान्यतः सपाट रहने के बावजूद, पिछली तिमाही की तुलना में काफी सुधार हुआ है। 2009-10 की ति3 के आंशिक आंकड़े बिक्री में तेज वृद्धि और मालसूची चक्र में सुधार दर्शाते हैं, दोनों आइआइपी वृद्धि की तेजी को मदद करते हैं। निवल निर्यात ने निरपेक्ष संदर्भ में नकारात्मक रहने के बावजूद, 2009-10 की ति2 में जीडीपी वृद्धि (मांग पक्ष) में काफी योगदान दिया।